नं. 1

संजीव®

बुक्स

हिन्दी–X

(कक्षा 10 के विद्यार्थियों के लिए)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के विद्यार्थियों के लिए

पूर्णतः नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार

- माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2026 के प्रश्न–पत्र का समावेश
- पाठ्यपुस्तक के सभी अभ्यास प्रश्नों का हल
- सभी प्रकार के अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश
- योग्य एवं अनुभवी लेखकों द्वारा लिखित

2027

संजीव प्रकाशन,
जयपुर

मूल्य : ₹ 280/-

प्रकाशक :
संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,
जयपुर-3
email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
website : www.sanjivprakashan.com

© प्रकाशकाधीन

मूल्य : ₹ 280.00

लेजर टाइपसैटिंग :
संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

मुद्रक : **पंजाबी प्रेस,** जयपुर

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

- इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं—
  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
  पता : प्रकाशन विभाग
  संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर
  आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।
- इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।
- सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान
पाठ्यक्रम

हिन्दी–कक्षा 10

इस विषय में एक प्रश्न-पत्र होगा जिसकी परीक्षा योजना निम्नानुसार है–

प्रश्न-पत्र	समय (घण्टे)	प्रश्न-पत्र के लिए अंक	सत्रांक	पूर्णांक
एक	3.15	80	20	100

अधिगम क्षेत्र	अंक
अपठित बोध	12
रचना	14
व्यावहारिक-व्याकरण	10
पाठ्यपुस्तक : क्षितिज-भाग 2	33
पूरक-पुस्तक : कृतिका-भाग 2	11

1. अपठित बोध : **12**

(i) अपठित गद्यांश (3 बहुचयनात्मक, 3 अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न) (6 प्रश्न × 1 अंक) = 6

(ii) अपठित पद्यांश (3 बहुचयनात्मक, 3 अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न) (6 प्रश्न × 1 अंक) = 6

2. रचना : **14**

(i) संकेत-बिंदुओं पर आधारित किसी एक आधुनिक विषय पर निबंध-लेखन (विकल्प सहित) लगभग 300 शब्दों में 6

(ii) पत्र-लेखन (औपचारिक/अनौपचारिक पत्र) (विकल्प सहित) 4

(iii) संक्षिप्तीकरण एवं पल्लवन (विकल्प सहित) 4

3. व्यावहारिक-व्याकरण : **10**

(2 बहुचयनात्मक, 6 रिक्त स्थान पूर्ति के प्रश्न एवं 1 लघूत्तरात्मक प्रश्न)

(i) पद भेद-संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और अव्यय 4

(ii) उपसर्ग एवं प्रत्यय 2

(iii) संधि और समास 2

(iv) मुहावरे और लोकोक्तियाँ पाठ्यपुस्तक के आधार पर 2

4. पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पुस्तक :

पाठ्यपुस्तक : क्षितिज **33**

(i) किन्हीं दो पठित गद्यांशों के विकल्प में से किसी एक पर अर्थग्रहण सम्बन्धी तीन प्रश्न 3

(ii) किन्हीं दो पठित पद्यांशों के विकल्प में से किसी एक पर अर्थग्रहण सम्बन्धी तीन प्रश्न 3

(iii) 2 दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न (1 गद्य एवं 1 पद्य भाग से विकल्प सहित)
(60–80 शब्द) 2 प्रश्न × 3 अंक = 6

(iv) 6 लघूत्तरात्मक प्रश्न (3 गद्य एवं 3 पद्य भाग से) (40 शब्द) 6 प्रश्न × 2 अंक = 12

(v) 6 बहुचयनात्मक प्रश्न (3 गद्य एवं 3 पद्य भाग से) 6 प्रश्न × 1 अंक = 6

(vi) किन्हीं एक रचनाकार का परिचय (दीर्घउत्तरीय प्रश्न)
(60–80 शब्द) 1 प्रश्न × 3 अंक = 3

पूरक-पुस्तक : कृतिका **11**

(i) एक दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न (विकल्प सहित) (60–80 शब्द) 1 प्रश्न × 3 अंक = 3

(ii) 2 लघूत्तरात्मक प्रश्न (40 शब्द) 2 प्रश्न × 2 अंक = 4

(iii) 4 बहुचयनात्मक प्रश्न 4 प्रश्न × 1 अंक = 4

निर्धारित पाठ्यपुस्तकें :

1. **क्षितिज–भाग 2**—एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित
2. **कृतिका–भाग 2**—एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित

नोट–विद्यार्थी उपर्युक्त पाठ्यक्रम को माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध अधिकृत पाठ्यक्रम से मिलान अवश्य कर लें। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध पाठ्यक्रम ही मान्य होगा।

विषय-सूची

क्षितिज भाग-2

काव्य-खण्ड

1.	सूरदास	1–12
2.	तुलसीदास	13–25
3.	जयशंकर प्रसाद	25–35
4.	सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'	35–44
5.	नागार्जुन	44–56
6.	मंगलेश डबराल	56–66

गद्य-खण्ड

7.	नेताजी का चश्मा	स्वयं प्रकाश	67–80
8.	बालगोबिन भगत	रामवृक्ष बेनीपुरी	80–91
9.	लखनवी अंदाज	यशपाल	91–99
10.	एक कहानी यह भी	मन्नू भण्डारी	100–112
11.	नौबतखाने में इबादत	यतीन्द्र मिश्र	112–126
12.	संस्कृति	भदंत आनन्द कौसल्यायन	126–134

कृतिका भाग-2

1.	माता का अँचल	शिवपूजन सहाय	135–145
2.	साना साना हाथ जोड़ि·····	मधु कांकरिया	145–157
3.	मैं क्यों लिखता हूँ?	अज्ञेय	157–164

व्यावहारिक व्याकरण

1.	पद-भेद-संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और अव्यय	165–190
2.	उपसर्ग	190–199
3.	प्रत्यय	199–207
4.	सन्धि	207–215
5.	समास	215–220
6.	मुहावरे और लोकोक्तियाँ	220–242

रचना

1. निबन्ध-लेखन

1. साइबर अपराध के बढ़ते कदम
अथवा
सूचना प्रौद्योगिकी में बढ़ते अपराध 243
2. कृत्रिम बुद्धिमता वरदान या अभिशाप
अथवा
कृत्रिम बुद्धिमता
अथवा
कृत्रिम बुद्धिमता मानवता के लिए घातक है 244
3. मेक इन इण्डिया–स्वदेशी जागरण का स्वरूप
अथवा
मेक इन इंडिया
अथवा
स्वदेशी उद्योग 245
4. आत्मनिर्भर भारत 246
5. भारत में कोरोना महामारी प्रबन्धन
अथवा
वैश्विक महामारी कोरोना 246
6. भारतीय नारी तब और अब
अथवा
राष्ट्रीय विकास में नारी की भागीदारी 247
7. राष्ट्र निर्माण में युवाओं का योगदान 248
8. बढ़ते हुए फैशन का दुष्प्रभाव
अथवा
फैशन की व्यापकता और उसका दुष्प्रभाव 249
9. प्लास्टिक थैली : पर्यावरण की दुश्मन
अथवा
प्लास्टिक कैरी बैग्स : असाध्य रोगवर्धक 249
10. कन्या भ्रूण हत्या : लिंगानुपात की समस्या
अथवा
कन्या भ्रूण हत्या : एक जघन्य अपराध 250
11. आतंकवाद : एक अन्तर्राष्ट्रीय समस्या
अथवा
आतंकवाद : एक विश्वव्यापी समस्या
अथवा
आतंकवाद : समस्या एवं समाधान 251
12. रोजगार गारंटी योजना : मनरेगा

अथवा
गाँवों के विकास की योजना : मनरेगा 252
13. राजस्थान में गहराता जल संकट
अथवा
राजस्थान में बढ़ता जल-संकट 253
14. बाल विवाह : एक अभिशाप 253
15. आतंकवाद : एक समस्या
अथवा
आतंकवाद : भारत की विकट समस्या 254
16. दहेज-प्रथा
अथवा
समाज का अभिशाप : दहेज प्रथा 255
17. वैश्विक महँगाई
अथवा
मूल्यवृद्धि : एक ज्वलन्त समस्या
अथवा
बढ़ती महँगाई : एक विकराल समस्या 255
18. पर्यावरण प्रदूषण
अथवा
पर्यावरण प्रदूषण : कारण और निवारण 256
19. भ्रष्टाचार : एक विकराल समस्या
अथवा
भ्रष्टाचार और गिरते सांस्कृतिक मूल्य 257
20. बढ़ते वाहन : घटता जीवन-धन
अथवा
वाहन-वृद्धि से स्वास्थ्य-हानि 257
21. युवा वर्ग में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति
अथवा
नशाखोरी : एक सामाजिक अभिशाप 258
22. बेरोजगारी की समस्या और समाधान
अथवा
रोजगार के घटते साधन 259
23. नारी सशक्तीकरण 260
24. मातृभाषा और उसका महत्त्व 260
25. सर्व शिक्षा अभियान
अथवा
जीवन में शिक्षा का महत्त्व 261

26. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ 262
27. शिक्षित नारी : सुख समृद्धिकारी
अथवा
नारी-शिक्षा का महत्त्व 263
28. कम्प्यूटर शिक्षा का महत्त्व
अथवा
कम्प्यूटर शिक्षा की आवश्यकता 263
29. निरक्षरता : एक अभिशाप 264
30. विद्यार्थी जीवन में नैतिक शिक्षा की उपयोगिता
अथवा
नैतिक शिक्षा की महत्ती आवश्यकता 265
31. सैनिक शिक्षा की आवश्यकता 266
32. इन्टरनेट की उपयोगिता
अथवा
विद्यार्थी जीवन में इन्टरनेट की भूमिका 266
33. मोबाइल फोन : वरदान या अभिशाप
अथवा
मोबाइल फोन : छात्र के लिए वरदान या अभिशाप 267
34. आधुनिक सूचना-प्रौद्योगिकी
अथवा
सूचना क्रांति के युग में भारत 268
35. कम्प्यूटर के बढ़ते कदम और प्रभाव
अथवा
कम्प्यूटर के बढ़ते चरण 269
36. दूरदर्शन : वरदान या अभिशाप
अथवा
युवा पीढ़ी पर दूरदर्शन का प्रभाव 269
37. मानव के लिए विज्ञान-वरदान या अभिशाप
अथवा
विज्ञान के बढ़ते कदम 270
38. समय का सदुपयोग 271
39. जल संरक्षण : हमारा दायित्व
अथवा
जल है तो जीवन है 271
40. अनुशासन का महत्त्व

अथवा

विद्यार्थी जीवन और अनुशासन 272

41. विद्यार्थी जीवन : भावी जीवन का आधार 273

42. वर्तमान की महत्ती आवश्यकता : राष्ट्रीय एकता

अथवा

राष्ट्रीय एकता

अथवा

राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता 273

43. समाज-निर्माण में पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका

अथवा

समाचार-पत्रों का महत्त्व 274

44. कटते जंगल : घटता मंगल 275

45. राजस्थान के मेले 275

46. भारत में षड् ऋतुओं का प्रभाव 276

47. ऋतुराज वसन्त

अथवा

प्रकृति का सौन्दर्य : वसन्त 277

48. त्योहारों का महत्त्व

अथवा

त्योहार : जनमंगल के आधार 277

49. राजस्थान के प्रमुख पर्वोत्सव

अथवा

राजस्थान के त्योहार 278

50. स्वास्थ्य ही श्रेष्ठ धन है

अथवा

स्वस्थ जीवन सुख का आधार 279

51. भारत में स्वास्थ्य सेवाओं की चुनौती 279

52. स्वच्छ भारत अभियान

अथवा

राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान 280

53. खुला-शौचमुक्त अभियान 281

54. भारतीय संस्कृति का अनुपम उपहार : योग

अथवा

योग भगाए रोग 281

55. शिक्षा के क्षेत्र में मोबाइल की उपयोगिता 282

56. शिक्षा में खेलकूद का महत्त्व
अथवा
जीवन में खेलों का महत्त्व 283
57. राजस्थान के प्रमुख लोकदेवता 283
58. राजस्थान के लोकगीत 284
59. राजस्थान की ऐतिहासिक धरोहर 284
60. नखरालो राजस्थान 285
61. मेरे सामने घटित भीषण दुर्घटना
अथवा
जीवन की वह चिरस्मरणीय घटना 286
62. गुरुजी जिन्हें मैं भुला नहीं सकता
अथवा
मेरे आदरणीय गुरुजी 286
63. जीवन की वह चिरस्मरणीय यात्रा
अथवा
किसी रोचक यात्रा का वर्णन 287
64. चुनाव का एक दृश्य
अथवा
चुनाव की हलचल 287
65. मेरा प्रिय नेता (युग पुरुष महात्मा गाँधी) 288
66. मेरा प्रिय कवि
अथवा
मेरा प्रिय साहित्यकार : गोस्वामी तुलसीदास 289
67. मेरी प्रिय पुस्तक : रामचरितमानस 289
68. स्वतंत्रता के 70 वर्ष–क्या खोया, क्या पाया? 290
69. इक्कीसवीं सदी का भारत
अथवा
मेरे सपनों का भारत 291
70. मुझे गर्व मेरे भारत पर
अथवा
मेरा भारत महान् 291
71. यदि मैं प्रधानमंत्री होता
अथवा
यदि मैं भारत का प्रधानमंत्री होता 292

72. यदि मैं प्रधानाचार्य होता 293
73. पर्यावरण संरक्षण परमावश्यक
अथवा
पर्यावरण संरक्षण और युवा 293
74. बढ़ता ध्वनि प्रदूषण 294
75. उपभोक्तावाद और भारतीय संस्कृति
अथवा
उपभोक्ता संस्कृति का बढ़ा कुप्रभाव 295
76. यातायात सुरक्षा
अथवा
सड़क सुरक्षा : जीवन सुरक्षा 295
77. मनोरंजन के आधुनिक साधन 296
78. भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण
अथवा
पर्यावरण संरक्षण : हमारा दायित्व 296
79. युवा वर्ग में असन्तोष–कारण और निवारण 297
80. आदर्श विद्यार्थी 298
81. वर्तमान समस्याएँ एवं निराकरण में युवाओं का योगदान
अथवा
सामाजिक विकास में युवाओं का सहकार 298
82. इलेक्ट्रिक वाहन : आज की आवश्यकता 299
83. सोशल मीडिया का बढ़ता प्रयोग एवं उसका प्रभाव 300

2. पत्र-लेखन (औपचारिक एवं अनौपचारिक पत्र) 301-332

3. संक्षिप्तीकरण (सार लेखन) एवं पल्लवन (विस्तार लेखन) 333-350

अपठित बोध

(i) अपठित गद्यांश 351-368

(ii) अपठित पद्यांश 369-384

माध्यमिक परीक्षा, 2026

हिन्दी

समय : 3 घण्टे 15 मिनट **पूर्णांक : 80**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यत: लिखें।
2. **सभी** प्रश्न हल करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
5. प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

खण्ड-'अ'

1. निम्नलिखित बहुविकल्पात्मक प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए : [12 × 1 = 12]

(i) ऐसे शब्द जिनके स्वरूप में लिंग, वचन, काल आदि के प्रभाव से कोई विकार नहीं होता – क्या कहलाते हैं? [1]
(अ) संज्ञा (ब) अव्यय (स) विशेषण (द) क्रिया

(ii) निम्नलिखित में से 'समाचार' शब्द में किस उपसर्ग का प्रयोग हुआ है? [1]
(अ) सम् (ब) सम (स) चार (द) स

(iii) मन्नू भण्डारी का जन्म हुआ था— [1]
(अ) अजमेर (ब) लखनऊ (स) दिल्ली (द) भानपुरा

(iv) अकेले सफर का वक्त काटने के लिए नवाब साहब ने क्या खरीदे? [1]
(अ) खीरे (ब) अखबार
(स) सेकंड क्लास का टिकट (द) पानी

(v) नेताजी की मूर्ति किस की बनी थी? [1]
(अ) लोहे की (ब) पीतल की (स) संगमरमर की (द) मिट्टी की

(vi) गोपियों ने 'हारिल की लकड़ी' किसे कहा है? [1]
(अ) कृष्ण को (ब) उद्धव को (स) सूरदास को (द) अक्रूर को

(vii) 'दंतुरित मुसकान' की मोहकता कब और बढ़ जाती है? [1]
(अ) जब बच्चा रोने लगता है (ब) जब झोंपड़ी में कमल खिल जाते हैं
(स) जब पत्थर पिघलने लगता है
(द) जब उसके साथ नजरों का बांकपन जुड़ जाता है।

(viii) मुख्य गायक का स्वर कैसा है? [1]
(अ) चट्टान जैसा भारी (ब) गूँजता हुआ
(स) कमजोर, काँपता हुआ (द) उत्साहित

(ix) बाबूजी आटे की गोलियाँ बनाकर कहाँ ले जाते थे? [1]
(अ) भोलाराम के साथ खेलने (ब) कबूतरों को देने
(स) मछलियों को खिलाने (द) गाय को खिलाने

(x) चोट लगने पर भोलाराम के घावों पर मइयाँ ने क्या लगाया? [1]
(अ) घी (ब) दवा (स) चावल का पानी (द) पीसी हुई हल्दी

(xi) 'साना-साना हाथ जोड़ि' पाठ में भारत के किस राज्य की यात्रा का वर्णन है? [1]
(अ) सिक्किम (ब) अरुणाचल प्रदेश (स) असम (द) हिमाचल प्रदेश

(xii) 'अज्ञेय' ने हिरोशिमा पर कविता लिखी— [1]
(अ) जापान में (ब) हिरोशिमा में (स) भारत लौटकर (द) अस्पताल में

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए : [6 × 1 = 6]

(i) तत्पुरुष समास के ..... भेद होते हैं। [1]
(ii) 'गणेश' शब्द में ..... संधि है। [1]
(iii) ऐसे शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाते हैं, उन्हें ..... कहते हैं। [1]
(iv) जो शब्दांश किसी शब्द के बाद में लगकर नए अर्थ का बोध कराते हैं, उन्हें ..... कहते हैं। [1]

(v) पुरुषवाचक सर्वनाम ..... प्रकार के होते हैं। [1]
(vi) जिस शब्द से किसी कार्य के करने या होने का बोध होता है, उसे ..... कहते हैं। [1]

3. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए : [6 × 1 = 6]

वाणी व्यक्ति के व्यवहार की पहचान होती है। मधुर वाणी कोयल की चारित्रिक विशेषता होती है। कौए की कर्कश बोली के कारण ही उसकी स्थिति कोयल से निम्न होती है। मीठी वाणी सभी को प्रिय होती है। किसी ने सच ही कहा है—''ऐसी वाणी बोलिए मन का आपा खोए, औरन को शीतल करे आपहुँ शीतल होए।'' मीठी वाणी का श्रोता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। उसका चित्त प्रसन्न हो जाता है। मीठी वाणी बोलने वाले की संगति सभी करना चाहेंगे। मधुर वाणी से शत्रु भी मित्र हो जाते हैं। ठीक इसके विपरीत कटु वचन से मन पर बुरा प्रभाव पड़ता है। श्रोता का मन खिन्न हो जाता है। कटुभाषी को जीवन-व्यापार में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। मीठी वाणी से सम्बन्धों में घनिष्ठता आती है। कटु वाणी बोलने वाले से कोई भी मित्रता नहीं करना चाहेगा।

(i) कोयल की चरित्रगत विशेषता है— [1]
(अ) काला रंग (ब) मधुर वाणी (स) कटु स्वर (द) कर्कशता
(ii) कटुभाषी को जीवन में किसका सामना करना पड़ता है? [1]
(अ) कठिनाइयों का (ब) सफलता का (स) मित्रता का (द) सरलता का
(iii) मीठी वाणी का श्रोता पर कैसा प्रभाव पड़ता है? [1]
(अ) सकारात्मक (ब) नकारात्मक (स) दुखी (द) बुरा
(iv) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। [1]
(v) मीठी वाणी का सम्बन्धों पर क्या प्रभाव पड़ता है? [1]
(vi) व्यक्ति के व्यवहार की पहचान किससे होती है? [1]

4. निम्नलिखित अपठित पद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए : [6 × 1 = 6]

नीलाम्बर-परिधान, हरित-पट पर सुन्दर है।
सूर्य-चन्द्र, युग-मुकुट मेखला रत्नाकर है।
नदियाँ प्रेम-प्रवाह, फूल तारे मण्डन हैं।
बन्दीजन खगवृन्द, शेषफन सिंहासन है।
करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस वेश की।
हे मातृभूमि ! तू सत्य ही सगुण मूर्ति सर्वेश की।

(i) कवि ने सर्वेश की सगुण मूर्ति किसे कहा है? [1]
(अ) नीलाम्बर को (ब) नदियों को (स) मातृभूमि को (द) सत्य को
(ii) मातृभूमि का परिधान है— [1]
(अ) नीलाम्बर (ब) रत्नाकर (स) शेषफन (द) फूल
(iii) नदियाँ किसकी प्रतीक हैं? [1]
(अ) बन्दीजन की (ब) खगवृन्द की (स) सत्य की (द) प्रेम की
(iv) उपर्युक्त पद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। [1]
(v) कवि ने युग-मुकुट किसे कहा है? [1]
(vi) इस सुन्दर वेश का अभिषेक कौन करता है? [1]

5. निम्नलिखित पठित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए : [3 × 1 = 3]

वैदिक इतिहास में शहनाई का कोई उल्लेख नहीं मिलता। इसे संगीत शास्त्रान्तर्गत 'सुषिर-वाद्यों' में गिना जाता है। अरब देश में फूँककर बजाए जाने वाले वाद्य जिनमें नाड़ी (नरकट या रीड) होती है, को 'नय' बोलते हैं। शहनाई को 'शाहेनय' अर्थात् 'सुषिर वाद्यों में शाह' की उपाधि दी गई है। सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में तानसेन के द्वारा रची बंदिश जो संगीत राग कल्पद्रुम से प्राप्त होती है, में शहनाई, मुरली, वंशी, शृंगी एवं मोरचंग आदि का वर्णन आया है।

(i) 'नय' किसे बोलते हैं? [1]
(ii) शहनाई को किसकी उपाधि दी गई है? [1]
(iii) तानसेन द्वारा रचित बंदिश में किन वाद्यों का वर्णन आया है? [1]

अथवा

एक बार कॉलेज से प्रिंसिपल का पत्र आया कि पिताजी आकर मिलें और बताएँ कि मेरी गतिविधियों के कारण मेरे खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई क्यों न की जाए? पत्र पढ़ते ही पिताजी आग-बबूला। ''यह लड़की मुझे कहीं मुँह दिखाने लायक नहीं रखेगी .... पता नहीं क्या-क्या सुनना पड़ेगा वहाँ जाकर ! चार बच्चे पहले भी

पढ़े, किसी ने ये दिन नहीं दिखाया।'' गुस्से से भन्नाते हुए ही वे गए थे। लौटकर क्या कहर बरपा होगा, इसका अनुमान था, सो मैं पड़ोस की एक मित्र के यहाँ जाकर बैठ गई। माँ को कह दिया कि लौटकर बहुत कुछ गुबार निकल जाए, तब बुलाना।

(i) प्रिंसिपल ने पत्र में क्या लिखा था? [1]
(ii) पिताजी के क्रोध से बचने के लिए लेखिका ने क्या किया? [1]
(iii) लेखिका ने माँ से क्या कहा? [1]

6. निम्नलिखित पठित पद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए : [3 × 1 = 3]

सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा॥
सो बिलगाउ बिहाई समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा॥
सुनि मुनिबचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अवमाने॥
बहु धनुही तोरी लरिकाईं। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं॥
येहि धनु पर ममता केहि हेतू। सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू॥

(i) शिवधनुष किसने तोड़ा? [1]
(ii) धनुष तोड़ने वाले को किसके समान बताया है? [1]
(iii) परशुराम को क्रोध क्यों आया? [1]

अथवा

ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी।
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।
ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।
प्रीति - नदी मैं पाउँ न बोर्‌यौ, दृष्टि न रूप परागी।
'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी॥

(i) गोपियों ने किसे बड़भागी कहा है? [1]
(ii) पुरइनि पात कहाँ रहता है? [1]
(iii) 'भोरी-अबला' किसे कहा है? [1]

खण्ड-'ब'

निम्नलिखित लघूत्तरात्मक प्रश्नों का उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए : [9 × 2 = 18]

7. लेखिका के पिताजी की सबसे बड़ी दुर्बलता क्या थी? 'एक कहानी यह भी' पाठ के आधार पर लिखिए। [2]
8. जीवन के आरंभिक दिनों में अमीरुद्दीन की संगीत के प्रति आसक्ति किसके प्रभाव से हुई? 'नौबतखाने में इबादत' पाठ के आधार पर बताइए। [2]
9. आग के आविष्कार में किसकी प्रेरणा रही होगी? 'संस्कृति' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए। [2]
10. 'उत्साह' कविता में 'निराला' ने बादल का चित्रण किस रूप में किया है? [2]
11. 'अट नहीं रही है' कविता में कवि ने फागुन की सुंदरता को किन संदर्भों में देखा है? [2]
12. 'संगतकार' कविता में कवि ने किसकी भूमिका का महत्त्व बताया है? [2]
13. 'गैंगटॉक' का असली नाम क्या है और इसका क्या अर्थ है? 'साना-साना हाथ जोड़ि' पाठ के आधार पर लिखिए। [2]
14. भोलानाथ और उसके साथी कौन-कौन-से खेल खेलते थे? 'माता का अँचल' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए। [2]
15. 'आस्तीन का साँप होना' मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए। [2]

खण्ड-'स'

16. ''हालदार साहब भावुक हैं। इतनी-सी बात पर उनकी आँखें भर आईं।'' हालदार साहब की आँखें क्यों भर आईं? 'नेताजी का चश्मा' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए। (उत्तर सीमा 60-80 शब्द) [3]

अथवा

बालगोबिन भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेले छोड़कर क्यों चली गई? 'बालगोबिन भगत' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए। (उत्तर सीमा 60-80 शब्द) [3]

17. गोपियों ने उद्धव की योग-साधना को कड़वी-ककड़ी क्यों बताया है? पठित पद के आधार पर उत्तर दीजिए। (उत्तर सीमा 60-80 शब्द) [3]

अथवा

''प्रकृति और मनुष्य के सहयोग से ही सृजन संभव है।'' 'फसल' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
(उत्तर सीमा 60-80 शब्द) [3]

18. पिताजी के खाना खिला देने के बाद भी मइयाँ भोलानाथ को थोड़ा और खिलाने के लिए हठ क्यों करती थी? 'माता का अँचल' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए। (उत्तर सीमा 60-80 शब्द) [3]

अथवा

'अनुभव से अनुभूति गहरी चीज है।' 'मैं क्यों लिखता हूँ?' पाठ के आधार पर बताइए कि लेखक के अनुसार उनके लेखन में क्या अधिक मदद करता है? (उत्तर सीमा 60-80 शब्द) [3]

19. 'सूरदास' के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संक्षिप्त परिचय दीजिए। (उत्तर सीमा 60-80 शब्द) [3]

अथवा

'यशपाल' के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संक्षिप्त परिचय दीजिए। (उत्तर सीमा 60-80 शब्द) [3]

खण्ड-'द'

निबन्धात्मक प्रश्न–

20. निम्नलिखित विषयों में से किसी **एक** विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबंध लिखिए : [6]

(1) आतंकवाद : एक अन्तर्राष्ट्रीय समस्या

(i) प्रस्तावना (ii) आतंकवाद के संभावित कारण
(iii) आतंकवाद के उद्देश्य
(iv) आतंकवाद को नियंत्रित करने के उपाय
(v) उपसंहार।

(2) 'मेक इन इंडिया' – स्वदेशी जागरण का नया रूप

(i) प्रस्तावना
(ii) मेक इन इंडिया और स्वदेशी जागरण का अर्थ
(iii) आम भारतीय नागरिक के कर्त्तव्य
(iv) राष्ट्र के विकास में स्वदेशी जागरण का योगदान
(v) उपसंहार।

(3) विद्यार्थी जीवन और अनुशासन

(i) प्रस्तावना (ii) अनुशासन का अर्थ और परिभाषा
(iii) विद्यार्थी जीवन में अनुशासन (iv) अनुशासन की उपयोगिता
(v) उपसंहार।

21. अन्तर्विद्यालयी वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर अपनी छोटी बहिन को एक बधाई-पत्र लिखिए। [4]

अथवा

स्वयं को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, राजगढ़ का छात्र रितेश मानते हुए अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को शुल्क मुक्ति हेतु प्रार्थना-पत्र लिखिए। [4]

22. निम्नलिखित अवतरण का संक्षिप्तीकरण कीजिए। [4]

वास्तव में हृदय वही है, जो कोमल भावों और स्वदेश प्रेम से ओत-प्रोत हो। प्रत्येक देशवासी को अपने वतन से प्रेम होता है। चाहे उसका देश सूखा, गर्म या दलदलों से युक्त हो। देश-प्रेम के लिए किसी आकर्षण की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि वह तो अपनी भूमि के प्रति मनुष्य मात्र की स्वाभाविक ममता है। मानव ही नहीं, पशु-पक्षियों तक को अपना देश प्यारा होता है। संध्या समय पक्षी अपने नीड़ की ओर उड़े चले जाते हैं। देश-प्रेम का अंकुर सभी में विद्यमान है। कुछ लोग समझते हैं कि मातृभूमि के नारे लगाने से ही देश-प्रेम व्यक्त होता है। दिन-भर वे त्याग, बलिदान और वीरता की कथा सुनाते नहीं थकते; लेकिन परीक्षा की घड़ी आने पर भाग खड़े होते हैं। ऐसे लोग स्वार्थ त्यागकर, जान-जोखिम में डालकर देश की सेवा क्या करेंगे? आज ऐसे लोगों की आवश्यकता नहीं है।

अथवा

निम्नलिखित पंक्ति का पल्लवन कीजिए। [4]

''पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं''

हिन्दी कक्षा X
क्षितिज भाग-2

काव्य-खण्ड

1. सूरदास

कवि-परिचय—भक्त प्रवर 'सूरदास' भक्तिकाल की सगुणधारा के कृष्ण भक्त कवि हैं। इनका जन्म सन् 1478 में माना जाता है। एक मान्यता के अनुसार उनका जन्म मथुरा के निकट रुनकता या रेणुका क्षेत्र में हुआ, जबकि दूसरी मान्यता के अनुसार उनका जन्म-स्थान दिल्ली के पास 'सीही' गाँव में माना जाता है। उन्होंने सगुण उपासना का प्रतिपादन किया। इनकी तीन रचनाएँ मानी जाती हैं—'सूरसागर', 'साहित्य लहरी' और 'सूर-सारावली'। जिसमें 'सूरसागर' सर्वाधिक प्रसिद्ध है। 'सूरदास' का वात्सल्य वर्णन हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि है। वे हिन्दी के रससिद्ध कवि हैं। उन्होंने कृष्ण को आराध्य मानकर उनकी बाल-लीलाओं, रूप-छवि, संयोग-वियोग, शृंगार तथा भक्ति से सम्बन्धित हजारों पदों की रचना की है। इनके 'भ्रमर गीत' में सगुण भक्ति का सुन्दर प्रतिपादन हुआ है। पुष्टिमार्गीय अष्टछाप के कवियों में सूरदास की गणना सर्वप्रथम की जाती है। ये मथुरा में गऊघाट पर रहकर श्रीनाथ जी के मंदिर में भजन-कीर्तन करते थे। आपकी भक्ति सख्य भाव की है। (जिसमें भगवान के साथ भक्त का 'सखा भाव' रहता है।) आप वल्लभाचार्य के प्रमुख शिष्य थे। सन् 1583 में पारसौली में उनका देहान्त हो गया।

भाषा-शैली—मूलतः सूर वात्सल्य, शृंगार व भक्ति के श्रेष्ठ कवि माने गए हैं। आपकी कविता में ब्रजभाषा के परिष्कृत एवं परिमार्जित रूप का प्रयोग स्पष्ट दिखाई देता है। पदों में कोमलकांत मधुर पदावली, सरल पदविन्यास, मधुर भाव व्यंजना तथा गेयता का तत्त्व विद्यमान है। रस-अलंकारों का प्रयोग भाषा में विशिष्ट बोध कराने वाला है। मन की तरल भावानुभूतियों का मनमोहक और आकर्षक चित्र अन्यत्र दुर्लभ है।

पाठ-परिचय—पाठ में संकलित चारों पद 'भ्रमरगीत' से लिए गये हैं। जिसमें उद्धव-गोपी संवाद के माध्यम से ज्ञान-योग का खण्डन तथा प्रेम-भक्ति का समर्थन किया गया है। गोपियों ने भ्रमर के ब्याज से उद्धव को खरी-खोटी सुनाईं, कृष्ण की भ्रमरवृत्ति पर आक्षेप किए हैं। यह उपालम्भ काव्य है जिसमें नायक की निष्ठुरता के साथ-साथ नायिका की मूक व्यथा, विरह वेदना का मार्मिक चित्रण भी मिलता है। पहले पद में गोपियाँ उद्धव को सौभाग्यशाली मानती हैं, क्योंकि वे कभी प्रेम के बंधन में नहीं बंधे और न उन्होंने प्रेम के वास्तविक अर्थ को जाना है। ये तो हमीं नासमझ हैं जो कृष्ण-प्रेम में ऐसे लिपट गईं जैसे गुड़ से चींटी लिपट जाती है। दूसरे पद में गोपियों की यह स्वीकारोक्ति कि उनके मन की आस मन में ही रह गयी, कृष्ण के प्रति उनके प्रेम की गहराई को अभिव्यक्त करती है। तीसरे पद में गोपियाँ उद्धव की योग-साधना को कड़वी ककड़ी जैसा बताकर कृष्ण के प्रति अपने एकनिष्ठ प्रेम में दृढ़ विश्वास व्यक्त करती हैं। चौथे पद में कटाक्ष करते हुए कहती हैं कि कृष्ण ने अब राजनीति सीख ली है। वे हमें योग-मार्ग अपनाने की बात कहकर हम पर अन्याय कर रहे हैं। उनका यह व्यवहार राजधर्म के विपरीत है।

कठिन शब्दार्थ, भावार्थ एवं अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न

पद

(1)

ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी।
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न त्यागी।
ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।
प्रीति-नदी मैं पाउँ न बोर्‌यौ, दृष्टि न रूप परागी।
'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी॥

कठिन-शब्दार्थ–बड़भागी = भाग्यशाली। **अपरस** = अछूता, अलिप्त। **तगा** = धागा। **नाहिन** = नहीं। **अनुरागी** = प्रेम में डूबा। **पुरइनि पात** = कमल का पत्ता। **दागी** = दाग, धब्बा। **माहँ** = भीतर, में। **गागरि** = गगरी, कलशी। **ताकौ** = उसको। **प्रीति** = प्रेम। **पाउँ** = पैर। **बोर्‌यौ** = डुबोया। **परागी** = मोहित हुई। **अबला** = स्त्री, दुर्बल मन वाली। **भोरी** = भोली। **गुर** = गुड़। **पागी** = लिपटी हुई।

भावार्थ–गोपियाँ उद्धव की प्रेमहीनता पर व्यंग्य कर कहती हैं कि हे उद्धव! तुम सचमुच बड़े भाग्यशाली हो, क्योंकि तुम कभी प्रेम के धागे से नहीं बँधे हो, अर्थात् प्रेम-बन्धन से सर्वथा मुक्त हो। तुम प्रेम-बंधन से उसी प्रकार सर्वथा मुक्त रहते हो, जिस प्रकार कमल का पत्ता जल में रहते हुए भी उसके स्पर्श से निर्लिप्त रहता है। अर्थात् उस पर जल की बूँद भी नहीं ठहर पाती। अथवा तेल की मटकी को जल के भीतर डुबाने पर भी उस पर जल की एक बूँद भी नहीं ठहरती। इसी प्रकार तुम भी प्रेम-रूप कृष्ण के हमेशा पास रहते हुए भी उनके प्रेम-भाव से मुक्त ही रहे, और उसका तनिक भी आस्वाद नहीं पा सके। उनके प्रभाव से हमेशा मुक्त बने रहते हो।

गोपियाँ कहती हैं कि तुमने आज तक कभी भी प्रेम-नदी में अपना पैर तक नहीं डुबोया। अर्थात् कभी प्रेम के पास तक नहीं फटके और तुम्हारी दृष्टि किसी के रूप को देखकर उस पर मोहित नहीं हुई है। परन्तु हम तो भोली-भाली अबलाएँ हैं, जो अपने प्रियतम की रूप माधुरी पर उसी प्रकार आसक्त होकर उसके प्रेम में पग गई हैं, जैसे चींटी गुड़ पर आसक्त होकर उसके ऊपर चिपक जाती है और फिर उससे अलग नहीं हो पाती है और वहीं अपने प्राण दे देती है।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

(क) गोपियों ने किसे बढ़भागी कहा है? **(माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2026)**

(ख) पुरइनि पात कहाँ रहता है?

(ग) 'भोरी-अबला' किसे कहा है?

उत्तर–(क) गोपियों ने उद्धव को बड़भागी कहा है।

उत्तर–(ख) पुरइनि पात (कमल का पत्ता) जल के भीतर रहता है।

उत्तर–(ग) 'भोरी-अबला' गोपियों को कहा है।

अथवा

(क) गोपियों ने किसे बड़भागी कहा है? **[माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2024 (सं.)]**

(ख) उसे बड़भागी क्यों कहा गया है?

(ग) 'पुरइनि पात' से क्या अभिप्राय है?

उत्तर–(क) गोपियों ने उद्धव को बड़भागी कहा है।

उत्तर–(ख) गोपियाँ व्यंग्य में उद्धव को बड़भागी अर्थात् भाग्यशाली मानती हैं, क्योंकि वे कृष्ण के समीप रहकर भी प्रेम बंधन में नहीं बंधे और न ही उनकी विरह वेदना को कभी जाना।

उत्तर–(ग) 'पुरइनि पात' से अभिप्राय है—कमल का पत्ता।

(2)

मन की मन ही माँझ रही।
कहिए जाइ कौन पै ऊधौ, नाहीं परत कही।
अवधि अधार आस आवन की, तन मन बिथा सही।
अब इन जोग सँदेसनि सुनि-सुनि, बिरहिनि बिरह दही।
चाहति हुतीं गुहारि जितहिं तैं, उत तैं धार बही।
'सूरदास' अब धीर धरहिं क्यौं, मरजादा न लही॥

कठिन-शब्दार्थ–माँझ = मध्य, में। **अवधि** = समय। **अधार** = आधार, सहारा। **आस** = आशा। **आवन की** = आने की। **बिथा** = पीड़ा। **दही** = जलना। **गुहारि** = रक्षा के लिए पुकारना। **बही** = बहना। **धीर** = धैर्य। **धरहिं** = रखें, धारण करें। **मरजादा** = मर्यादा। **लही** = ग्रहण।

भावार्थ–सूरदास जी गोपियों की विरह व्यथा को व्यक्त करते हुए उनकी दयनीय दशा को बता रहे हैं। कृष्ण ने योग संदेश गोपियों को देने के लिए तथा उनका प्रेम भूलने के लिए उद्धव को भेजा था। जहाँ उद्धव को गोपियाँ कहती